धीरे से तू चल रे जीवन

कृष्णा
रुड़की,

धीरे से तू चल रे जीवन, तुझे छोड़ कहीं नहीं जाऊंगा,
कुछ काम अधूरे कर पूरे, फिर तेरी शरण में आऊँगा।

तेरे तेजी से चलने में, कुछ अपने मुझसे छूट गए,
जो आस लगाये बैठे थे, वो भी है मुझसे रूठ गए।
यदि मोहलत तेरी मिल जाये, तो छूटों से मिल आऊंगा,
जो रूठ गए हैं मुझसे, उनको भी मना कर आऊँगा।

तू इतना कर विश्वास मेरा, तुझे छोड़ कहीं नहीं जाऊंगा,
कुछ काम अधूरे कर पूरे, फिर तेरी शरण में आऊँगा।

दुनिया की आपाधापी में, सत्कर्म भी करना भूल गया,
इस माया मोह के चक्कर में, मैं फर्ज निभाना भूल गया।
धन दौलत में सुख चाहा था, पर ये तो कोरा भ्रम निकला,
पर्दा जब उठ गया आंखों से, तब जाकर असली ज्ञान मिला।

इस असली ज्ञान से यहां पर मैं, है ज्ञान की अलख जगाऊँगा,
कुछ काम अधूरे कर पूरे, फिर तेरी शरण में आऊँगा।

कुछ इच्छा अभी अधूरी है, कुछ काम भी बहुत जरूरी है,
ख्वाइशें जो घुट गयी इस दिल में, उनको दफनाना जरूरी है।
कुछ रिश्ते बन के टूट गये, कुछ जुड़ते–जुड़ते छूट गये,
जो जख्म दिये इन रिश्तों ने, हम इनमें सब कुछ भूल गये।

इन जख्मों को सहलाकर के, मैं शीघ्र लौटकर आऊँगा,
कुछ काम अधूरे कर पूरे, फिर तेरी शरण में आऊँगा।

इन सांसों पर है हक जिनका, उनको समझाना शेष अभी,
है कर्ज बहुत इस जीवन पर, उसको भी चुकाना शेष अभी,
ये नरेश कुमार को कर वायदा, तू इसका साथ निभायेगा,
तेरा यदि साथ मिले इसको, तो बहुत दूर तक जायेगा।

तू आगे चल मैं आता हूं, क्या छोड़ तुझे जी पाऊँगा,
कुछ काम अधूरे कर पूरे, फिर तेरी शरण में, आऊँगा।